International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 7, pp: 664-666 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

भारतीय शिक्षा का उद्देश्य

डॉ सोमेश नारायण सिंह

(विभागाध्यक्ष, शिक्षा-संकाय, हंडियापी.जी.कॉलेजहंडियाप्रयागराज)

Date of Submission: 25-09-2020 Date of Acceptance: 13-10-2020

मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष तथा दैनिकजीवन की प्रत्येक क्रिया को सफल बनाने के लिए उद्देश्य का होना आवश्यक है बिना उद्देश्य के हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते।शिक्षा के क्षेत्र में भी उद्देश्य का होना अति आवश्यक है। उद्देश्य एक पूर्व दर्शित लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता है अथवा व्यवहार को प्रेरित करता है।जब हम शिक्षा की बात करते है तो प्राचीन शिक्षा से इसकी शुरुआत करते है वैदिक कालीन शिक्षा का अर्थ अत्यधिक व्यापक था व शिक्षा जीवन से संबंधित थी और व्यक्ति को समर्थ तथा उन्नत बनाने में सहायक मानी जाती थी। विद्या के अभाव में व्यक्ति केवल पशु मात्र ही रह जाता है। शिक्षा के उद्देश्य और आदर्श महान थे धार्मिकता के अतिरिक्त चरित्र का निर्माण, व्यक्ति का सर्वांगीण विकास, नागरिक और सामाजिक कर्तव्य पर बाल, सामाजिक सुख और कौशल की उन्नति तथा राष्ट्रीय संस्कृत का संरक्षण और प्रसार था। समय के साथ-साथ शिक्षा के उद्देश्यों में भी परिवर्तन हो गया। वैदिक काल में जहां शिक्षा अध्यात्म, संगीत, वेद, उपनिषद, राजनीति, रण कौशल आदि पर आधारित हुआ करती थी। मध्य काल में शिक्षा का उद्देश्य बदल गया और शिक्षा केवल धर्म के प्रचार प्रसार के लिए ही उपयोग में आने लगी। मध्यकाल अर्थात मुस्लिम काल में शिक्षा का उद्देश्य केवल बालक को धार्मिक शिक्षा प्रदान करना था शिक्षा के मूल में केवल उनको सामान्य ज्ञान और धर्म ग्रंथों के अध्ययन के लिए शिक्षित किया जाता था उनका मूल उद्देश्य धार्मिक प्रचार प्रसार करना ही था ।जबकिआधुनिक काल में शिक्षा का उद्देश्य बालक के सर्वांगीण विकास पर आधारित हो गया।इस शिक्षा में बालक के मस्तिष्क के विकास की ही नहींअपितुउसके शारीरिक विकास पर भी ध्यान दिया जाता हैआधुनिक पाठ्यक्रम में बालक के हर एक रुचि को ध्यान में रखा जाता है अथवा उसके सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया जाता है

प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति होता था। भारतीयसंस्कृति में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मे चार लक्ष्य माने जाते हैं जिन्हें पुरुषार्थ की संज्ञा दी जाती है,**धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।**इन चारों में मोक्ष सबसे अधिक पवित्र एवं महत्वपूर्ण माना जाता है।

- शिक्षा के कुछ मुख्य उद्देश्य-
- **ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता**-भारत में विद्या तथा ज्ञान की खोज केवल ज्ञान प्राप्ति के लिए ही नहीं अपितु उसका विकास धर्म के आवश्यक अंग के रूप में हुआ वह धर्म के मार्ग पर चलकर मोक्ष प्राप्त या आत्मज्ञान का एक क्रमिक प्रयास माने गए अतः इस प्रकार जीवन के चरम उद्देश्य प्राप्ति का माध्यम बन गए । यह उद्देश्य था मोक्ष या मुक्ति इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षा के अंतर्गत शिक्षा के विभिन्न व्रतों का पालन नियमित संध्या एवं धार्मिक उत्सव का आयोजन किया जाता था इस समय तक आर्य ब्रह्म की सत्ता में विश्वास करते थे ।गुरु अपने शिष्य को प्रार्थना करना यज्ञ करना, वेद मंत्रों का उच्चारण करना ,आदिनियम विधिवत बताते थे।इस प्रकार के धार्मिक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में दया क्षमा त्याग सहिष्णुता उदारता एवं परोपकार की भावना का समावेश करना था।गुरु अपने शिष्य को उपनयन संस्कार के माध्यम से अपने शरण में लेते थे और गुरुकुल में विद्यार्थियों को रखकर वह उनकी उचित विद्या का प्रबंध किया करते थे ।गुरुकुल में विद्या का विषय ब्रह्म ज्ञान, वेद, उपनिषद, संगीत, राजनीति, अस्त्र-शस्त्र आदि

की शिक्षा व्यावहारिक रूप से दी जाती थी।शिष्य अपने गुरु का सानिध्य पाकर उच्च शिक्षा को ग्रहण करता था इतना ही नहीं वैदिक काल में शिक्षा को मोक्ष का साधन माना जाता था

- **चरित्र निर्माण**-शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य चरित्र निर्माण करना था शिक्षा प्राप्त के उपरांत विद्यार्थी के चरित्र में बदलाव शिक्षा प्राप्त की सफलता के रूप में माना जाता था। शिक्षा प्राप्त के उपरांत विद्यार्थी एक चिंतक के बाद स्वयं अथवा परिवार और समाज के विषय में सोचता है शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो मनुष्य मेंविभिन्नता उत्पन्न करती है।एक शिक्षित मनुष्य हमेशा अपने समाज के कुशलता के विषय में सोचेगा जबकि शिक्षा विहीन मनुष्य अपने स्वार्थ की पूर्ति में व्यस्त रहता है। वैदिक शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य चरित्र निर्माण करना था शिक्षा तभी सार्थक मानी जाती थी जब उसके द्वारा विद्यार्थियों की विवेक बुद्धि और जीवन के प्रत्येक कार्य क्षेत्र में उन्हें सफलता मिले।सच्चरित्रता को अत्यधिक महत्व दिया जाता था
- **व्यक्तित्व का विकास**-व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य होता है शिक्षा द्वारा शारीरिक और बौद्धिक योग्यता का समान रूप से विकास किया जाता है। बालक के मानसिक शक्तियों के विकास के लिए स्वस्थ शरीर का अत्यधिक महत्व हैमाना जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है ।विद्यार्थी में आत्मसम्मान की भावना को बढ़ावा दिया जाता था ,उनमें इंद्रियों को वश में करना, आत्म संयम और आत्मविश्वास की भावना को अधिक से अधिक बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता था। गुरुकुल में इस प्रकार के प्रयोग किए जाते थे कि विद्यार्थी में आत्मविश्वासएवं आध्यात्मिकता का विकास हो सके।किसी भी कठिन परिस्थिति में वह व्याकुल ना हो और संयम अथवा धैर्य से उस परिस्थिति का सामना कर सके। विद्यार्थी न्याय और विवेक बुद्धि द्वारा शिक्षा का प्रयोग करें अपने आत्मसम्मान को बढ़ाने के लिए शिक्षा के माध्यम से उसे इस तथ्य की स्पष्ट जानकारी दे दी जाती थी कि वह देश की संस्कृत का रक्षक है।
- **नागरिक और सामाजिक कर्तव्यों का पालन**-शिक्षा मानव को सौहार्द और भाईचारे को बढ़ावा देने का एक माध्यम बना देती है एक शिक्षित मनुष्य अपने देश के प्रति निष्ठावान होता है वह अपने देश के कर्तव्य और नियमों का पालन बिना किसी विरोध के सम्मान करता है।अध्ययन काल में ही विद्यार्थी को उसके नागरिक और सामाजिक कर्तव्य से अवगत कराया जाता है उसे भावी राष्ट्र का निर्माता समझा जाता है अतः स्वार्थपरता से दूर रहने की शिक्षा दी जाती है,परोपकार को ही परम धर्म बताया गया है। गुरुकुल में गुरु अपने शिष्य को राजनीति की शिक्षा इसलिएदिया करते थे कि वह भाभी राष्ट्र का निर्माता अथवा नीति वान बन सके अपने राष्ट्र के नीति से अवगत हो सके समय पड़ने पर अपने राष्ट्र में नीति निर्माण का कार्य कर सकें।
- **सामाजिक सुख और कौशल की उन्नति**-मानव जब समाज में रहता है तो उसे अपने स्वयं के स्वार्थ को त्याग कर समाज के कल्याण अथवा उसकी उन्नति का ध्यान रखना शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य होजाता है। शिक्षा का उद्देश्य व्यवहारी क्षेत्र में कुशल नागरिकों का निर्माण करना होता हैप्राचीन भारतीय समाज श्रम विभाजन के सिद्धांत पर निर्मित था अतः प्रत्येक विद्यार्थी को इस दृष्टिकोण से शिक्षा दी जाती थी कि वह भावी जीवन में समाज के इस प्रकार के ढांचे में पूरी तरह अपने लिए स्थान बना सके।
- **राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण और प्रसार** –प्राचीन काल तक एक व्यक्ति अपने राजा के राज्य को ही राष्ट्र मानता था और उसके प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करता था व्यक्ति का कर्तव्य होता था कि वह राष्ट्र की संस्कृति का संरक्षण उसका प्रसार करें जिसके लिए शिक्षा अति आवश्यक थी। शिक्षा का मूल उद्देश्य अपने राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण करना था।शिक्षा के माध्यम से हम अपने शिक्षित वर्ग के संरक्षित ज्ञान को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने में

सफल हो सकते बिना शिक्षा के ज्ञान का आदान प्रदान एवं विकास संभव नहीं है।

- **निष्कर्ष**-समग्र रूप से हम कर सकते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य बालक के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है परंतु शिक्षा का मूल उद्देश्य मोक्ष कीप्राप्ति ही थी। शिक्षा का उद्देश्यसमय-समय पर बदलता रहा हैआदि काल में शिक्षा वंशानुक्रम पर आधारित थी अर्थात जो बालक ब्राह्मण है वह ब्राम्हण और जो क्षत्रिय है वह क्षत्रिय की शिक्षा प्राप्त करते थे। मध्यकाल में शिक्षा का उद्देश्य धार्मिक प्रचार-प्रसार तक केंद्रित हो गया और आधुनिक काल में शिक्षा का उद्देश्य बालकका सर्वांगीण विकास करना ही एकमात्र उद्देश्य है ।
- **सन्दर्भ ग्रंथ सूची**-

- अदावल,एस.बी.-भारतीय शिक्षा की समस्याएं तथा प्रवित्तियाँ
- अल्तेकर,ए.बी.-एडुकेशन इनएंशिएंटइंडिया
- ओड, एल.के.-शिक्षा के नूतन आयाम
- विकिपीडिया